Prof. Khushbu Kumari
Guest Teacher
Dept. of Political science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani, Inmu

Class - B.A - 3(H)

Ajanta PRODUCTS
Page No. Paper - VI
Date

Topic - मॉर्गेन्थो का यथार्थवादी सिद्धान्त

Lecture - I

मॉर्गेन्थो ने अपने यथार्थवादी सिद्धान्त में छः सिद्धान्तों का वर्णन किया है जो निम्नलिखित हैं —

(1) मानवीय स्वभाव के वस्तुनिष्ठ कानूनों पर आधारित राजनीतिक सिद्धान्त — मॉर्गेन्थो राजनीतिक यथार्थवाद के पहले नियम में लिखता है कि "राजनीति सामान्य समाज की तरह उन वस्तुनिष्ठ नियमों द्वारा संचालित होती है जिनकी जड़ें मानव स्वभाव में है।" राजनीतिक यथार्थवाद का विश्वास है कि सामान्यतया समाज की भाँति राजनीति भी उन यथार्थवाद अथवा वस्तुपरक नियमों से अनुशासित होती है जो मानव प्रकृति में निहित है। समाज को सुधारने के लिए आवश्यक है कि पहले उन नियमों को समझ लिया जाये जो समाज के जीवाधार है। इन नियमों की प्रक्रिया पर हमारा कोई अधिकार नहीं है अतः यदि इन्हें चुनौती दी गयी तो इसमें हमारी ही हानि है तथा असफलता की सम्भावना अधिक है। यथार्थवाद राजनीति के प्रत्यक्ष स्वरूप को महत्व देता है अतः इसका विश्वास है कि एक ऐसे विवेकपूर्ण सिद्धान्त का विकास किया जा सकता है जो इन वस्तुपरक नियमों को प्रतिबिम्बित करे। इस सिद्धान्त ने सत्य को यथार्थ माना है। अतः सत्य का प्रमाणों द्वारा समर्थित एवं बुद्धि द्वारा ग्राह्य होना भी

आवश्यक है। मत को सत्य नहीं कहा जा सकता। मत व्यक्तिनिष्ठ, तथ्य से निरपेक्ष पूर्वाग्रहों पर आधारित होता है जबकि सत्य वस्तुनिष्ठ, विवेकपूर्ण, साक्ष्य और तर्कसंगत होता है इसलिए यह सिद्धान्त राजनीतिक सिद्धान्तों का आधार भी तर्क और अनुभव को मानता है।

(2) राष्ट्रीय शक्ति के रूप में परिभाषित राष्ट्रीय हित — यथार्थवादी राजनीतिक सिद्धान्त का दूसरा सिद्धान्त राष्ट्रहित की प्रधानता है। मार्गेन्थो के शब्दों में "शक्ति के नाम से लक्षित स्वार्थों का विचार ही वह प्रमुख मार्गदर्शक है जो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में यथार्थवाद का पथ-प्रदर्शन करता है। यह धारणा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को समझने के कारण तथा समझने योग्य तथ्यों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करती है।" इनके अनुसार राजनीति का मुख्य आधार हित और इसकी सुरक्षा है और इसलिए राजनीति को भी शक्ति से अलग रखकर नहीं समझा जा सकता है। मार्गेन्थो की मान्यता है कि विदेश नीति-निर्माता राजनीतिज्ञ शक्ति को, जो राजनीति का केन्द्र-बिन्दु है, आधार मानकर ही नीतियों की रचना करते हैं।

यह सिद्धान्त यह परवाह नहीं करता कि क्या नैतिक है, क्या अनैतिक है, क्या हो रहा है, क्या होना चाहिए, वह तो केवल उन्हीं सम्भावनाओं की ओर ध्यान

Scanned with CamScanner

देता है जो किसी राष्ट्र विशेष के काल और स्थान की किन्हीं ठोस परिस्थितियों के अन्तर्गत आती है। राजनीतिक यथार्थवाद राजनेताओं के उद्देश्यों पर अधिक बल नहीं देता बल्कि अपने-अपने राष्ट्रों के राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति के सम्बन्ध में उनकी वास्तविक प्राप्तियों के आधार पर उनकी नीतियों तथा कार्यों को जाँचता है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का नैतिक मूल्यों और दार्शनिक मान्यताओं से सम्बन्ध न होने का यह अर्थ नहीं है कि यह मानदण्डों के मूल्यों की अवहेलना करता है। इसमें न केवल सैद्धान्तिक बल्कि दार्शनिक तत्व भी होते हैं।

Khushbu Kumari
24th Aug. 2020